❍ 16 / 12 / 22 की मुरली से चार्ट ❍

⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗इस पतित दुनिया से दिल हटाया ?∗

➢➢ ∗स्वदर्शन चक्रधारी बनकर रहे ?∗

➢➢ ∗दिव्य बुधी द्वारा त्रिकालदर्शी स्थिति का अनुभव किया ?∗

➢➢ ∗रूहानी नशे द्वारा बेफिक्र स्थिति में स्थित रहे ?∗

————————————————————

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ आत्मिक स्वरूप में रहने से लौकिक में रहते भी अलौकिकता का अनुभव करेंगे। अपने को आत्मिक रूप में न्यारा समझना है। ∗कर्तव्य से न्यारा होना तो सहज है, उससे दुनिया को प्यारे नहीं लगेंगे, दुनिया को प्यारे तब लगेंगे जब शरीर से न्यारी आत्मा रूप में कार्य करेंगे। इससे ही मन के प्रिय, प्रभु प्रिय और लोक प्रिय बनेंगे।∗

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं बापसमान शक्तिशाली आत्मा हूँ"*

〰✧ सदा स्वयं को शक्तिशाली आत्मा अनुभव करते हो? शक्तिशाली आत्मा का हर संकल्प शक्तिशाली होगा। *हर संकल्प में सेवा समाई हुई हो। हर बोल में बाप की याद समाई हो। हर कर्म में बाप जैसा चरित्र समाया हुआ हो।* तो ऐसी शक्तिशाली आत्मा अपने को अनुभव करते हो?

〰✧ मुख में भी बाप, स्मृति में भी बाप और कर्म में भी बाप के चरित्र - इसको कहा जाता है बाप समान शक्तिशाली। ऐसे हैं? *एक शब्द 'बाबा' लेकिन यह एक ही शब्द जादू का शब्द है। जैसे जादू में स्वरूप परिवर्तन हो जाता वैसे एक बाप शब्द समर्थ स्वरूप बना देता है।*

〰✧ गुण बदल जाते, कर्म बदल जाते, कर्म बदल जाते, बोल बदल जाते। यह एक शब्द, जादू का शब्द है। तो सभी जादूगर बने हो ना। जादू लगाना आता है ना। *बाबा बोला और बाबा का बनाया, यह है जादू।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ आज बहुत बातें सुनाई है। अभी एक सेकण्ड में एकदम मन और बुद्धि को बिल्कुल प्लेन कर एक बाप से सर्व संबंधों
का, बाप ही संसार है - चाहे व्यक्ति संबंध, चाहे प्राप्तियाँ, यही संसार है। तो *एक ही बाप संसार है, इस बाप की याद में, इस रूप में, इस रस में, इस अनुभव मे लवलीन हो जाओ।* (बापदादा ने 3 मिनट ड्रिल कराई) अच्छा।

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *फरिश्ते अर्थात् अपने फ्युचर द्वारा अन्य आत्माओं के फ्युचर बनाने वाले सदा अपना फ्युचर सामने रहता है?* जितना निमित्त बनी हुई आत्मायें अपने फ्यचर को सदा सामने रखेंगी उतना अन्य आत्माओं को भी अपना फ्यचर

बनाने की प्रेरणा दे सकेंगी। अपना फ्युचर स्पष्ट नहीं तो दूसरों को भी स्पष्ट बनाने का रास्ता नहीं बता सकेंगी। *अपना फ्युचर स्पष्ट है? महाराजा या महारानी- जो भी बने, लेकिन उससे पहले अपना भविष्य फ़रिश्तेपन का, कर्मातीत अवस्था का- वह सामने स्पष्ट आता है? ऐसा अनुभव होता है कि मैं हर कल्प में फ़रिश्ते स्वरूप में ये पार्ट बजा चुकी हूँ और अभी बजाना है? वो झलक सामने आती है? जैसे दर्पण में अपने स्वरूप की झलक देखते हो ऐसे नॉलेज के दर्पण में अपने पुरुषार्थ से फ़रिश्तेपन की झलक स्पष्ट दिखाई देती है? जब तक फ़रिश्तेपन की झलक स्पष्ट दिखाई नहीं देगे तब तक भविष्य भी स्पष्ट नहीं होगा।* यह संकल्प आता ही रहेगा कि शायद मैं ये बनूँ या वो बनूँ? लेकिन फ़रिश्तेपन की झलक स्पष्ट दिखाई देगी तो वह भी स्पष्ट दिखाई देगी। तो वह दिखाई देता है या अभी घूंघट में है? *जैसे चित्र का अनावरण कराते हो तो अपने फ़रिश्ते स्वरूप का अनावरण कब करेंगे? आपे ही करेंगे या चीफ़ गेस्ट को बुलायेंगे? यह पुरुषार्थ की कमज़ोरी का पर्दा हटाओ तो स्पष्ट फ़रिश्ता रूप हो जायेगा।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- बाप को और चक्र को याद कर एवर निरोगी बनना"*

➳ ➳ मैं आत्मा बाह्य जगत में चक्कर लगा रहे अपने मन-बुद्धि को

अंतर्जगत में लेकर जाती हूँ... अंतर्जगत का चक्कर लगाते भृकुटी सिंहासन पर बैठ जाती हूँ... *मैं आत्मा स्मृतियों की सीट पर बैठकर स्वदर्शन चक्र फिराते हुए पहुँच जाती हूँ हिस्ट्री हाल में...* प्यारे बाबा संदली पर विराजमान होकर सुप्रीम शिक्षक के रूप में मुझे एवर निरोगी बनने का पाठ पढ़ाते हैं...

❊ *प्यारे बाबा तन के क्लेश मिटाकर एवर निरोगी बनने का राज बताते हुए कहते हैं:-* "मेरे मीठे फूल बच्चे... जिसे पाने की चाहत में दर दर भटक रहे थे, वह जब सम्मुख है तो उस पिता की याद में गहरे डूब जाओ... *यह यादे ही सच्चे सुखो से दामन छलकायेगी... जीवन को निरोगी बनाकर, अनन्त खुशियो की बहारे खिलाएंगी... इन मीठी यादो में सदा के खो जाओ..."*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा सिमर सिमर सुख पाती हुई बाबा की यादों में डूबकर कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे प्यारे बाबा... *मै आत्मा भगवान को जगह जगह खोज रही थी... आज भाग्य की बलिहारी से पिता शिक्षक और सतगुरु के रूप में पाकर धन्य धन्य हो गयी हूँ...* मीठे बाबा... मेरा भटकना अब छूट गया है और मै आत्मा सदा की सुखी हो गयी हूँ..."

❊ *मीठे बाबा पारलौकिक सुखों की लहरों से जीवन को सुखमय बनाते हुए कहते हैं:-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... ईश्वरीय यादो में देवताई सुख समाये है... *इन यादो से ही जनमो के विकर्मो से मुक्ति है... इसलिए ईश्वर पिता की याद को हर साँस में पिरो दो...* दिल की धड़कन की तरहा याद को दिल में समालो और सच्चे सुख निरोगी काया को पाकर सदा का मुस्कराओ..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा मीठे बाबा के मीठे प्यार के समंदर में डूबकर कहती हूँ:-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... मै आत्मा आपको जड़ चेतन व्यक्तियो में खोज कर, कितनी बेहाल हो गयी थी... आपने आकर मुझे आवाज दी, और अपने से मिलवाया... मीठे बाबा... मै आत्मा रोम रोम से आपकी शुक्रगुजार हूँ... *प्यारे बाबा... अब तो हर पल आपकी यादो के नशे में मदमस्त हूँ..."*

❊ *मेरे बाबा काँटों रूपी दुखों को निकाल मुझ पर रंग बिरंगी फूलों की बरसात करते हुए कहते हैं:-* "प्यारे सिकीलधे मीठे बच्चे... एक पिता की यादो

में खोकर अपने भाग्य को देवताओ सा खुबसूरत और दिव्य बनाओ... *यह मीठी यादे ही तन मन को सदा का स्वस्थ बनाएगी... जीवन के सब दुःख दूर हो जायेंगे और आप बच्चे खुशनुमा फूल से सुखो में खिल जायेंगे..."*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा अपने तन मन को बाबा की यादों के दिव्य सुगंध से महकाते हुए कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... मै आत्मा दुखो के दलदल में फंसकर तन मन से रुग्ण हो गयी थी... आपने प्यारे बाबा मुझे सदा का सुखी बनाया है... *मेरे थके कदमो तले अपने प्यार का मखमल बिछाया है... सच्चे प्यार में मिले सुकून और शीतलता ने जीवन की तपिश को हर लिया है..."*

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- स्वदर्शन चक्रधारी बनना है*"

➳ _ ➳ स्वदर्शन चक्रधारी बन अपने 84 जन्मो के भिन्न - भिन्न स्वरूपों का गहराई से अनुभव करने के लिए मैं स्वयं को अशरीरी स्थिति में स्थित करती हूँ। *इस स्थिति में स्थित होते ही मैं स्वयं को विदेही, निराकार और मास्टर बीज रुप स्थिति में अपने शिव पिता परमात्मा के सामने परम धाम में देख रही हूँ*। कोई संकल्प कोई विचार मेरे मन में नही है। निर्संकल्प अवस्था। बस बाबा और मैं। *बीज रुप बाप के सामने मैं मास्टर बीज रुप आत्मा डेड साइलेंस की स्थिति का स्पष्ट अनुभव कर रही हूँ। कितना निराला अनुभव है। कितना अतीन्द्रिय सुख समाया है इस अवस्था में*।

➳ _ ➳ यही मेरा संपूर्ण अनादि स्वरुप है। मन बुद्धि रूपी नेत्रों से मैं देख रही हूँ अपने अनादि सतोप्रधान स्वरूप को जो बहुत सुंदर, बहुत आकर्षक और बहुत ही प्यारा है। *बीजरूप निराकार परम पिता परमात्मा शिव बाबा की अजर, अमर, अविनाशी सन्तान मै आत्मा अपने अनादि स्वरूप में सम्पर्ण पावन,

सतोप्रधान अवस्था मे हूँ*। एक दिव्य प्रकाशमयी दुनिया जहां हजारों चंद्रमा से भी अधिक उज्ज्वल प्रकाश है उस निराकारी पवित्र प्रकाश की दुनिया की मैं रहने वाली हूँ। सर्व गुणों और सर्वशक्तियों से भरपूर हूँ।

➳ _ ➳ अपने इसी अनादि सतोप्रधान स्वरुप में मैं आत्मा परमधाम से अब नीचे आ जाती हूं। संपूर्ण सतोप्रधान देह धारण कर नई सतोप्रधान दुनिया में मैं प्रवेश करती हूं। संपूर्ण सतोप्रधान चोले में अवतरित देवकुल की सर्वश्रेष्ठ आत्मा के रुप में इस सृष्टि चक्र पर मेरा पार्ट आरंभ होता है। *अब मैं मन बुद्धि से देख रही हूँ अपने आदि स्वरूप में देव कुल की सर्वश्रेष्ठ आत्मा के रूप में स्वयं को सतयुगी दुनिया में*। 16 कला सम्पूर्ण, डबल सिरताज, पालनहार विष्णु के रूप में मैं स्वयं को स्पष्ट देख रही हूँ। लक्ष्मी नारायण की इस पुरी में डबल ताज पहने देवी देवता विचरण कर रहे हैं। *राजा हो या प्रजा सभी असीम सुख, शान्ति और सम्पन्नता से भरपूर हैं। चारों ओर ख़ुशी की शहनाइयाँ बज रही हैं। प्राकृतिक सौंदर्य भी अवर्णनीय है*।

➳ _ ➳ अब मैं आत्मा अपने पूज्य स्वरूप का अनुभव कर रही हूं। मैं देख रही हूं मंदिरों में, शिवालयों में भक्त गण मेरी भव्य प्रतिमा स्थापन कर रहे हैं। *मेरी जड़ प्रतिमा से भी शांति, शक्ति और प्रेम की किरणे निकल रहीं हैं जो मेरे भक्तों को तृप्त कर रही हैं*। अपने पूज्य स्वरूप में मैं आत्मा स्वयं को कमल आसन पर विराजमान, शक्तियों से संपन्न अष्ट भुजाधारी दुर्गा के रूप में देख रही हूं। *असंख्य भक्त मेरे सामने भक्ति कर रहे हैं, मेरा गुणगान कर रहे हैं, तपस्या कर रहे हैं, मुझे पुकार रहे हैं, मेरा आवाहन कर रहे हैं। मैं उनकी सभी शुद्ध मनोकामनाएं पूर्ण कर रही हूँ*।

➳ _ ➳ अब मैं देख रही हूँ स्वयं को अपने ब्राह्मण स्वरूप में। ब्राह्मण स्वरुप में स्थित होते ही अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य की स्मृति में मैं खो जाती हूँ। संगम युग की सबसे बड़ी प्रालब्ध स्वयं भाग्यविधाता भगवान मेरा हो गया। विश्व की सर्व आत्माएँ जिसे पाने का प्रयत्न कर रही है उसने स्वयं आ कर मुझे अपना बना लिया। *कितनी पदमापदम सौभाग्यशाली हूँ मैं आत्मा जिसे घर बैठे भगवान मिल गए। मेरा यह दिव्य आलौकिक जन्म स्वयं परमपिता परमात्मा शिव बाबा के कमल मख दवारा हआ है। स्वयं परमात्मा ने मझे कोटों

में से चुन कर अपना बनाया है*। अपने ब्राह्मण जीवन की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धियों को देखते - देखते मुझे अपने ब्राह्मण जीवन के कर्तव्यों का भी ध्यान आने लगता है। उन कर्तव्यों को पूरा करने के लिए अब मैं स्वयं को अपने फ़रिशता स्वरूप में स्थित करती हूँ।

➳ _ ➳ अब मैं डबल लाइट फरिश्ता बन गया हूँ। मेरे अंग - अंग से श्वेत रश्मियाँ निकल रही हैं। मेरे चारों ओर प्रकाश का एक शक्तिशाली औरा बनता जा रहा है। मेरे सिर के चारों ओर सफेद प्रकाश का एक बहुत सुंदर चमकदार क्राउन दिखाई दे रहा है। *ज्ञान और योग के चमकदार पंख मुझ फरिश्ते की सुंदरता को और अधिक निखार रहे हैं। सम्पूर्ण फरिश्ता स्वरूप धारण किये, परमपिता का संदेशवाहक बन विश्व की सर्व आत्माओं को परमात्मा के इस धरा पर अवतरित होने का संदेश देने के लिए अब मैं सारे विश्व का भ्रमण कर रहा हूँ*।

———————————————————

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं दिव्य बुद्धि द्वारा त्रिकालदर्शी स्थिति का अनुभव करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं सफलतामूर्त आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————————

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव रूहानी फखुर(नशे) में रहती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदैव बेफिक्र स्थिति में स्थित रहती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदैव यथार्थ निर्णय देती हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ 1. कौन-सी विशेष कमी है जिसके कारण आधी माला भी रूकी हुई है? तो चारों ओर के बच्चे हर एरिया, एरिया के इमर्ज करते गये, जैसे आपके जोन हैं ना, ऐसे ही एक-एक जोन नहीं,]जोन तो बहुत-बहुत बड़े हैं ना। तो एक-एक विशेष शहर को इमर्ज करते गये और सबके चेहरे देखते गये, देखते-देखते *ब्रह्मा बाप ने कहा कि एकविशेषता अभी जल्दी-से-जल्दी सभी बच्चे धारण कर लेंगे तो माला तैयार हो जायेगी।* कौन सी विशेषता? तो यही कहा कि जितनी सर्विस में उन्नति की है, सर्विस करते हुए आगे बढ़े हैं। अच्छे आगे बढ़े हैं *लेकिन एक बात का बैलेन्स कम है। वह यही बात कि निर्माण करने में तो अच्छे आगे बढ़ गये हैं लेकिन निर्माण के साथ निर्मान - वह है निर्माण और वह है निर्मान। मात्रा का अन्तर है।* लेकिन निर्माण और निर्मान दोनों के बैलेन्स में अन्तर है। सेवा की उन्नति में निर्मानता के बजाए कहाँ-कहाँ, कब-कब स्व-अभिमान भी मिक्स हो जाता है। *जितना सेवा में आगे बढ़ते हैं, उतना ही वृत्ति में, दृष्टि में, बोल में, चाल में निर्मानता दिखाई दे, इस बैलेन्स की अभी बहुत आवश्यकता है।*

➳ _ ➳ 2. *ऐसे नहीं सोचो - यह तो है ही ऐसा, यह तो बदलना नहीं है। जब प्रकृति को बदल सकते हो, एडजेस्ट करेंगे ना प्रकृति को? तो क्या ब्राह्मण आत्मा को एडजेस्ट नहीं कर सकते हो?* अगेन्स्ट को एडजेस्ट करो. यह है -

निर्माण और निर्मान का बैलेन्स। सुना!

➳ _ ➳ अभी तक जो सभी सम्बन्ध-सम्पर्क वालों से ब्लैसिंग मिलनी चाहिए वह ब्लैसिंग नहीं मिलती है। और *पुरुषार्थ कोई कितना भी करता है, अच्छा है लेकिन पुरुषार्थ के साथ अगर दुआओं का खाता जमा नहीं है तो दाता-पन की स्टेज, रहमदिल बनने की स्टेज की अनुभूति नहीं होगी।* आवश्यक है - स्व पुरुषार्थ और साथ-साथ बापदादा और परिवार के छोटे-बड़ों की दुआयें। यह दुआयें जो हैं - यह पुण्य का खाता जमा करना है। यह मार्क्स में एडीशन होती है। *कितनी भी सर्विस करो, अपनी सर्विस की धुन में आगे बढ़ते चलो,लेकिन बापदादा सभी बच्चों में यह विशेषता देखने चाहते हैं कि सेवा के साथ निर्मानता, मिलनसार - यह पुण्य का खाता जमा होना बहुत-बहुत आवश्यक है।* फिर नहीं कहना कि मैंने तो बहुत सर्विस की, मैंने तो यह किया, मैने तो यह किया, मैने तो यह किया, लेकिन नम्बर पीछे क्यों? इसलिए *बापदादा पहले से ही इशारा देते हैं कि वर्तमान समय यह पुण्य का खाता बहुत-बहुत जमा करो।*

✺ *ड्रिल :- "निर्माणता और निर्मानता का बैलेन्स रखना"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा अमृतवेले मेरे मीठे बापदादा से मिलन मना रही हूँ... *बाबा मुझ आत्मा में ऐसे शक्तियां भर रहें हैं जैसे खाली गुब्बारे में गैस भर रहें हों... मैं आत्मा इन शक्तिशाली किरणों से भरपूर हो स्वयं को बहुत ही पावरफुल और हल्का अनुभव कर रही हूँ...* मैं आत्मा अपना फरिश्ता रूप धारण कर ग्लोब पर बैठ जाती हूँ... योगयुक्त होकर... बाबा से प्राप्त इन शक्तिशाली किरणों को समस्त विश्व की आत्माओं पर... प्रकृति के पांचों तत्वों पर प्रवाहित कर रही हूँ...

➳ _ ➳ अब मैं आत्मा साकार वतन में... अपनी देह में प्रविष्ट होकर पार्ट बजा रही हूँ... इन आँखों से इस ड्रामा को देख रही हूँ... साक्षीपन के स्वमान में रह हरेक के पार्ट को देख रही हूँ... *याद आ रही है बापदादा की श्रीमत... बच्चे-बोल में निर्मान बनो... निर्माणता ही महानता है... मुख से ऐसे बोल बोलो जो सब कहे कि अभी और सुनाओ...* कभी भी अभिमान के बोल बोलकर... दूसरों को दःख नहीं दो... कष्ट नहीं दो...

➳ _ ➳ *मैं आत्मा बापदादा की श्रीमत फॉलो कर... अपने स्वभाव को निर्मल... शांत बना रही हूँ... मुझे हर कार्य में सफलता प्राप्त हो रही है... शुद्ध... शीतल... निर्मल स्वभाव धारण कर... मैं आत्मा हरेक आत्मा की विशेषता को देख रही हूँ...* कभी भी मन में यह ख्याल नही लाती कि... यह आत्मा यह कार्य नहीं कर सकती... अपितु सकरात्मक सोच रखकर उस आत्मा को उमंग उत्साह दिलाती हूँ कि तुम यह कार्य बहुत अच्छे से कर सकते हो... सफलता तो तुम्हारा जन्मसिद्ध अधिकार है...

➳ _ ➳ *निमित्तभाव... निर्माणभाव... और निर्मल वाणी रख सर्व आत्माओं को निर्मान और निर्माण स्थिति में रह मास्टर मुक्तिदाता बन सभी को मुक्ति... जीवनमुक्ति का रास्ता दिखा रही हूँ...* हरेक आत्मा के प्रति कल्याण की भावना... ऊँचा उठाने की भावना... मधुरता... निर्माणता का स्वभाव धारण कर... व्यवहार कर रही हूँ... सभी आत्माओं के प्रति शुभ भावना... शुभ कामना... रहम की भावना कूट कूट कर भर गई है... मेरी दृष्टि... वृति... कृति में निर्मानता की रूहानियत झलक रही है...

➳ _ ➳ *जो भी आत्माऐं मेरे सम्बन्ध सम्पर्क में आ रही हैं उन्हें मुझ आत्मा से पॉजिटिव वाइब्रेशनस मिल रही हैं... बहुत शांति की अनुभूति हो रही है... उनके मुख से मुझ आत्मा के लिये आर्शीवचन निकल रहें हैं... बहुत ब्लेसिंग्स मिल रहीं हैं... जिससे दुआओं का... पुण्य का खाता जमा हो रहा है...* मैं आत्मा बाबा के खजानों के अधिकार के नशे में रह... उमंग उत्साह के पंख लगा अपनी निर्मान स्थिति द्वारा बाबा को प्रत्यक्ष कर रही हूँ...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔